5. 'पानी की प्रार्थना' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

राजेश जोशी की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(15)

[This question paper contains 8 printed pages.]

31.05.2024 (M)

Your Roll No..............

Maitreyi College LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi-110021

Sr. No. of Question Paper : 1455 **H**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : **हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 75**

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,

वह पीड़ा, जिस की गहराई को स्वयं उसी ने नापा,

कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़वे तम में

यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,

उल्लम्ब-बाह्, यह चिर-अखंड अपनापा

जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय

इस को भक्ति को दे दो।

अथवा

जी नहीं दिल्लगी की इस में क्या बात,

मैं लिखता ही तो रहता हूँ दिन-रात,

तो तरह-तरह के बन जाते हैं गीत,

जी रूठ-रूठ कर मन जाते है गीत,

जी बहुत ढेर लग गया हटाता हूँ,

गाहक की मर्जी, अच्छा, जाता हूँ,

मैं बिलकुल अंतिम और दिखाता हूँ,

अच्छी आदतें अक्सर बहुत डरपोक होती हैं

और अक्सर अपने बिल खोदकर रखती हैं

अच्छी आदतें कई बार जिद बन जाती हैं

और ऐसे लोगों को अव्यावहारिक

माना जाता है कामकाजी समाज में। **(काव्य-बिंब)**

3. अज्ञेय के काव्य की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

4. दुष्यंत कुमार के काव्य शिल्प पर विचार कीजिए।

अथवा

"रघुवीर सहाय साठोत्तरी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।" सोदाहरण लिखिए। (15)

(ख) यहाँ तरह-तरह के जूते आते हैं

और आदमी की अलग-अलग 'नवैयत'

बतलाते हैं

सबकी अपनी-अपनी शक्ल है

अपनी-अपनी शैली है

मसलन एक जूता है:

जूता क्या है-चकतियों की थैली है

इसे एक चेहरा पहनता है

जिसे चेचक ने चुग लिया है

उस पर उम्मीद को तरह देती हुई हँसी है।

(काव्य-सौंदर्य)

(ग) हत्या में जो चीज सबसे पहले मरती है

वह कविता की सबसे जरूरी पंक्ति हैं

या भीतर जा कर पूछ आइए, आप,

है गीत बेचना वैसे बिलकुल पाप

क्या करूँ मगर लाचार हार कर

गीत बेचता हूँ।

(ख) कहाँ तो तय था चराग़ाँ हरेक घर के लिए,

कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

यहाँ दरख़्तों के साए में धूप लगती है,

चलें यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।

न हो कमीज तो पाँव से पेट ढक लेंगे,

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।

खुदा नहीं न सही आदमी का ख़्वाब सही,

कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिए।

अथवा

उसके बाद सर्दियाँ आ जायेंगी

और मैंने देखा है कि सर्दियाँ जब भी आती हैं

तो माँ थोड़ा और झुक जाती है

अपनी परछाई की तरफ

उन के बारे में उसके विचार

बहुत सख्त है

मृत्यु के बारे में बेहद कोमल

पक्षियों के बारे में

वह कभी कुछ नहीं कहती

हालाँकि नींद में

वह खुद एक पक्षी की तरह लगती है।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

(क) प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,

सात साल की बच्ची का पिता तो है!

सामने गियर से उपर

हुक से लटका रक्खी हैं

काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी

बस की रफ़्तार के मुताबिक

हिलती रहती हैं.....

झुककर मैंने पूछ लिया

खा गया मानो झटका

अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोला: हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया। (मूल – संवेदना)